



न्यायालय

सहायक कलक्टर/उपखण्ड अधिकारी

थानागाजी-अलवर

(पीठासीन अधिकारी -केशव कुमार मीना आर.ए.एस.)

प्रार्थना पत्र संख्या:-2020 / 00052

दर्ज तिथि:- 21.10.2020

1. सूरजमल पुत्र भगवान
2. बाबूलाल पुत्र भगवान
3. चमेली पत्नि स्व० दुर्गालाल
4. हंसराज पुत्र दुर्गालाल
5. विजयकुमार पुत्र दुर्गालाल
6. मूला पुत्र प्रभू
7. मिसरी पत्नि प्रभू
8. रामप्रताप पुत्र प्रभू
9. लक्ष्मीनारायण पुत्र प्रभू
10. हजारीलाल पुत्र पोखर

समस्त जाति जांगिड ब्राहमण निवासी बल्लूवास तहसील थानागाजी अलवर राजस्थान

.... प्रार्थीगण

बनाम

1. हनुमान पुत्र भूरा जाति गुर्जर
2. राजन्ती पत्नि नारायण जाति मीना
3. सचिन पुत्र नारायण जाति मीना
4. अन्जली पुत्री नारायण नाबालिग
5. काजल पुत्री नारायण नाबालिग दोनो बसरपरस्ती राजन्ती माताखुद जाति मीना निवासीयान सीलीबावड़ी तहसील थानागाजी जिला अलवर

.....अप्रार्थीगण

उपस्थित

प्रार्थी अधिवक्ता:-श्री रामकरण चौपड़ा।

अप्रार्थी:- श्री गोपीराम शर्मा।

पैरोकार सरकार।

प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 251-क

राजस्थान काश्तकारी अधि.-1955

—:निर्णय:—

दिनांक 06.07.2023

1. आज यह पत्रावली प्रार्थना पत्र अन्तर्गत धारा 251-क राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 वास्ते निर्णय पेश हुई। प्रकरण का सुक्ष्म वृतान्त इस प्रकार से है कि प्रार्थी द्वारा राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 251-‘क’ के अन्तर्गत एक प्रार्थना पत्र प्रस्तुत कर निवेदन किया है कि प्रार्थी की खातेदारी आराजी 862/0.04 है0 वाके ग्राम बल्लूवास में



पहुँच के प्रयोजन के लिए थानागाजी-दौसा सड़क से तरफ पूर्व में स्थित खसरा संख्या 859/0.49 है0 चाही तृतीय की दक्षिणी डोल के सहारे-सहारे आगे चलकर सिवायचक आराजी खसरा संख्या 857/1.01 है0 बंजड एवं खसरा संख्या 855/1.10 है0 बंजड में से दक्षिण डोल के सहारे-सहारे तरफ पूर्व से पश्चिम 365 लम्बाई तथा उत्तर से दक्षिण 10 फुट चौडा मार्ग वाके ग्राम बल्लूवास रास्ता हेतु अनुतोष चाहा गया है। प्रार्थी का कथन है कि प्रार्थी की आराजीयात तक कोई रिकॉर्डेड रास्ता दर्ज रिकॉर्ड नहीं है तथा उक्त आवेदित रास्ते के अतिरिक्त अन्य कोई लघूत्तम मार्ग का विकल्प नहीं होने के कारण उक्त आवेदित रास्ते को करीब 10 फुट चौडाई में रिकॉर्ड में दर्ज कर प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र स्वीकार किये जाने का निवेदन किया।

2. प्रार्थना पत्र दर्ज रजिस्टर किया जाकर अप्रार्थीगण को तलब किया गया। अप्रार्थीगण संख्या 01 लगायत 05 असागतन-वकालतन उपस्थित होकर जवाब पेश कर निवेदन किया कि आवेदक द्वारा मौके पर जो रास्ता विद्यमान बताया है, वह रास्ता न तो कभी था, न ही वर्तमान में मौके पर है। उक्त आवेदित रास्ते के अतिरिक्त मौके पर एक वैकल्पिक मार्ग खसरा संख्या 860 के तरफ पूर्व को स्थित खसरा संख्या 861 से होते हुए प्रार्थी की गैर मुमकिन चाह व अन्य आराजीयात तक मौके पर विद्यमान है, जो लघूत्तम व निकटतम है। अतः प्रार्थी का प्रार्थना-पत्र खारिज का निवेदन किया गया। तहसीलदार थानागाजी से राजस्थान काश्तकारी (सरकार) नियम 1955 के नियम 68 लगायत 70 के अनुसार मौका जाँच रिपोर्ट तलब की गई। तहसीलदार थानागाजी के द्वारा अपने पत्र क्रमांक/भू0अ0/2023/991 दिनांक 27.03.2023 के द्वारा मौका रिपोर्ट प्रेषित की गई।
3. प्रकरण में तहसीलदार थानागाजी से तलब मौका रिपोर्ट पर अप्रार्थी अधिवक्ता ने ऐतराज प्रार्थना पत्र बाबत पुनः मौका रिपोर्ट प्रेषित करने हेतु प्रार्थना पत्र बाबत ऐतराज पेश कर निवेदन किया कि मौका कमिश्नर ने मौका रिपोर्ट में मौके पर चालू रास्ता बताया है जबकि रिपोर्ट में जो चालू रास्ता दर्शाया गया है वहां पहले से ही अप्रार्थी द्वारा पक्की दीवार बनी हुई है। प्रार्थी को स्वयं के चाह/कुएं पर जाने के लिए पंचायत भीकमपुरा द्वारा सार्वजनिक रास्ता चालू करवा दिया है जो रास्ता प्रार्थी के कुएं से होता हुआ आगे तक जारी है। जिसके बारे में मौका कमिश्नर मौका रिपोर्ट में जिक्र नहीं किया। अतः मौका रिपोर्ट मौका कमिश्नर से पुनः तलब किये जाने का निवेदन किया।
4. प्रकरण में विद्वान अधिवक्तागण उभयपक्षकारान की बहस सुनी गई। वकील प्रार्थी ने दौराने-ए-जिरह प्रार्थना-पत्र में अंकित तथ्यों को दोहराया मात्र एवं खसरा संख्या 859/0.49 है0 चाही तृतीय की दक्षिणी डोल के सहारे-सहारे आगे चलकर सिवायचक आराजी खसरा संख्या 857/1.01 है0 बंजड एवं खसरा संख्या 855/1.10 है0 बंजड में से दक्षिण डोल के सहारे-सहारे तरफ पूर्व से पश्चिम 365 लम्बाई तथा उत्तर से दक्षिण 10 फुट चौडाई का नवीन रास्ता राजस्व रिकार्ड में दर्ज किये जाने का निवेदन किया। अप्रार्थी अधिवक्ता ने अन्य वैकल्पिक मार्ग की उपलब्धता व आत्यान्तिक आवश्यकता नहीं होने के कारण प्रार्थना पत्र खारिज फरमाने का निवेदन किया।
5. प्रकरण में प्रार्थना पत्र के साथ अप्रार्थी तहसीलदार की मौका-रिपोर्ट का अवलोकन किया गया। बहस पर मनन किया गया। प्रकरण में तथ्यों का गहन विश्लेषण से पूर्व राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-'क' का उद्धरण यहाँ प्रतीत होता है-

धारा 251-क- अन्य खातेदार की जोत में से होकर भूमिगत पाइपलाइन बिछाना या नया मार्ग खोलना या विद्यमान मार्ग का विस्तार करना-(1) जहाँ

(क) कोई अभिधारी, अपनी जोत की सिंचाई के प्रयोजन के लिए किसी अन्य खातेदार की जोत में से होकर भूमिगत पाइपलाइन बिछाना चाहता है या

(ख) कोई अभिधारी या अभिधारियों का कोई समूह अपनी जोत या, यथास्थिति, उनकी जोतों तक पहुंचने के लिए अन्य खातेदार की जोत में से एक नया मार्ग बनाना चाहता है, या किसी विद्यमान मार्ग को विस्तारित या चौड़ा करना चाहता है—

और मामला पारस्परिक सहमति से तय नहीं होता है तो ऐसा अभिधारी या, यथास्थिति, ऐसा अभिधारी ऐसी सुविधा के लिए सम्बन्धित उपखण्ड अधिकारी को आवेदन कर सकेंगे, और उपखण्ड अधिकारी, यदि सक्षिप्त जाँच के पश्चात उसका समाधान हो जाता है कि—

(1) यह आवश्यकता आत्यंतिक आवश्यकता है और यह जोत के केवल सुविधाजनक उपभोग के लिए नहीं है, और

(2) अन्य खातेदार की जोत में से होकर, विशिष्ट नये मार्ग के मामले में, पहुंचने के वैकल्पिक साधन का अभाव सिद्ध किया गया है—

तो आदेश द्वारा, आवेदक को, अभिधारी को, जो उस भूमि को धारित करता, द्वारा सीमांकित या दर्शित लाईन के साथ-साथ भूमि की सतह से कम से कम 3 फिट नीचे पाइप लाईन बिछाने के लिए या ऐसे ट्रैक पर, जो उस अभिधारी द्वारा जो उस भूमि को धारित करता है, दर्शाया जाये, भूमि में से होकर, और यदि ऐसे ट्रैक दर्शित नहीं किया जाये तो लघुत्तम या निकटतम रूट से एक नया मार्ग जो 30 फिट से अनाधिक तक विस्तारित या चौड़ा करने के लिए, उस अभिधारी को, जो उस भूमि को धारित करता है, जिसमें से होकर पाइप लाईन बिछाने या एक नया मार्ग बनाने या विद्यमान मार्ग को चौड़ा करने का मार्ग मंजूर किया जाये, ऐसे प्रतिकर के संदाय पर जो विहित रीति से उपखण्ड अधिकारी द्वारा अवधारित किया जाये, अनुज्ञात कर सकेगा।

(1) जहाँ-उपधारा (1) के अधीन नया मार्ग बनाने या किसी विद्यमान मार्ग को विस्तारित करने या चौड़ा करने का मार्ग मंजूर किया जाये वहाँ ऐसे मार्ग को समाविष्ट करने वाली उस भूमि के संबंध में अभिधृति निर्वापित की हुई समझी जायेगी और वह भूमि राजस्व अभिलेखों में "रास्ता" के रूप में अभिलिखित की जायेगी।

(2) वे व्यक्ति, जिनको उपधारा (1) में निर्दिष्ट सुविधाओं में से किसी भी सुविधा के उपभोग के लिए अनुज्ञात किया गया है, उक्त सुविधा के आधार पर उस जोत में, जिसमें से होकर ऐसी सुविधा मंजूर की जाये, कोई भी अन्य अधिकार अर्जित नहीं करेंगे।

5. इसी प्रकार राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-'क' के प्रावधानों की क्रियान्विति हेतु बनाये गये राजस्थान काश्तकारी (सरकार) नियम 1955 के नियम 68 लगायत 70 का उद्धरण करना यहां प्रासंगिक प्रतीत होता है जो इस प्रकार है—

68. Application under Sec. 251-A. - An application for grant of permission under sub-sec. (1) of 251-A of the Act shall be in Form 1.

69. Enquiry and disposal of application. - On receipt of an application in Form I, the Sub-Divisional Officer shall either inspect the site himself or get it inspected by an officer not below the rank of the Inspector Land Records and invite objections from the affected persons. The Sub-Divisional Officer after affording an opportunity of being heard to the parties and making such further enquiry, as he thinks necessary, if satisfied that-

(i) the necessity is absolute necessity and it is not for mere convenient enjoyment of holding; and

(ii) particularly in case of a new way through another khatedar's holding, that absence of alternative means of access is proved, may allow the application. The application shall be decided by the Sub-Divisional Officer within 90 days from the date of application.

70. Determination of compensation. - (1) The amount of compensation payable under sub-sec. (1) of Sec. 251-A of the Act, shall be determined in the following manner:-

(i) if the parties mutually agree on the amount of compensation, the Sub-Divisional Officer, shall determine the amount of compensation as per the mutual agreement.

(ii) if the parties do not agree mutually on the amount of compensation, the Sub-Divisional Officer shall determine the amount of compensation for the land equivalent to-

(a) two times of the rates recommended by the District Level Committee constituted under clause (b) of sub-rule (D) of Rule 2 of the Rajasthan Stamps Rules, 2004 or the rates determined by the State Government under sub-rule (2) of Rule 58 of the Rajasthan Stamps Rules, 2004, in the matter of a new way or enlargement or widening of an existing way; and

(b) 10% of the rates recommended by the District Level Committee; constituted under clause (b) of sub-rule (1) of Rule 2 of the Rajasthan Stamps Rules, 2004 or the rates determined by the State Government under sub-rule (2) of Rule 58 of the Rajasthan Stamps Rules, 2004, in the matter of laying underground pipeline.

(2) In addition to the value of land determined under clause (a) or (b) of sub-rule j (1), if any loss or damages caused due to removal of standing trees, crops or structure, the amount of actual loss or damages shall also be determined.

6. प्रकरण में राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 251-क के तहत सरकारी सिवायचक भूमि से नवीन रास्ता चाहा गया है। सरकारी सिवायचक भूमि से नवीन रास्ता हेतु राजस्व विभाग राजस्थान सरकार के परिपत्र दिनांक 14.06.2013 के द्वारा निर्देश

जारी किये हुए हैं। अतः राजस्व विभाग राजस्थान सरकार के परिपत्र दिनांक 14.06.2013 का प्रासंगिक विवरण इस प्रकार है:—

परिपत्र

विषय:—राजकीय भूमि पर सार्वजनिक रास्ता निकालने के सम्बन्ध में।

सम्बंधित खातेदारों की आपसी सहमति से उनके खेतों तक पहुँच के लिए रास्ता गुजरता है या नया रास्ता प्रस्तावित है तो रास्ते में आने वाली भूमि का राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 के प्रावधानों के तहत समर्पण किया जाकर रास्ते का राजस्व रिकॉर्ड में अंकन किया जाता है। यदि ऐसे प्रस्तावित रास्ते के बीच में यदि कोई राजकीय भूमि पडती है तो उसका भी समाधान किया जा चुका है एवं यदि खातेदार आपस में सहमत नहीं है तो वह खातेदार जिसको जोत तक पहुँच ने के लिए अन्य खातेदार की जोत में से होकर नया मार्ग बनाना है या पुराने रास्ते को चौड़ा करना है तो उनका प्रावधान राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा-251-क में दिया गया है। लेकिन उक्त प्रावधान केवल खातेदारी भूमि पर से रास्ते के सम्बन्ध में ही है। लेकिन ऐसे प्रकरण जिसमें खातेदार को अपनी जोत तक पहुँच ने के लिए कोई रास्ता नहीं है। खातेदार राजकीय भूमि में से होकर ही अपनी जोत तक पहुँच सकता है। खातेदार द्वारा अपनी जोत तक आन-जाने के लिए रास्ता चाहा जा रहा है।

उक्त समस्या के समाधान के लिए यह निर्णय लिया गया है कि यदि कोई खातेदार अपनी जोत तक पहुँच ने लिए राजकीय भूमि में से होकर नया मार्ग बनाना चाहता है या किसी विद्यमान मार्ग को विस्तारित या चौड़ा करना चाहता है तो ऐसे खातेदार द्वारा ऐसी सुविधा के लिए आवेदन करने पर उपखण्ड अधिकारी द्वारा जाँच करने पर यह समाधान हो जाये कि मार्ग की आवश्यकता है एवं खातेदार को उसकी जोत तक पहुँचने के लिए वैकल्पिक साधन का अभाव है। उक्त स्थिति में राजस्थान स्टाम्प नियम-2004 के नियम-2 के उपनियम-(1) के खण्ड-(ख) के तहत गठित जिला स्तरीय समिति द्वारा सिफारिश की गई कृषि भूमि दरों पर दुगुना प्रतिकर लिया जाकर रास्ता प्रदत्त किया जावे। यह नया मार्ग लघुत्तम या निकटतम रूट से होगा तथा 30 फिट से अधिक चौड़ा नहीं होगा। रास्ते के लिए प्रदत्त की गई भूमि राजस्व अभिलेखों में रास्ते के रूप में अभिलिखित की जावेगी तथा उक्त भूमि का प्रयोग सार्वजनिक होगा।

7. इस प्रकार राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 251-क एवं राजस्थान काश्तकारी (सरकार) नियम 1955 के नियम 68 लगायत 70 के उद्धरण से स्पष्ट है कि धारा 251-क के अन्तर्गत कोई खातेदार अपनी आराजी तक कृषि कार्य बाबत आमद-रफत हेतु अन्य खातेदारों की आराजी में से होकर रास्ता रिकार्डेड अंकित करवा सकता है। इस हेतु उक्त राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 251-क निम्न पूर्वशर्तों को आरोपित करती है जो इस प्रकार है—

1. खातेदार की रास्ते बाबत अन्य रिकार्डेड रास्ते के विकल्प की अनुपस्थिति।
2. खातेदार की रास्ते बाबत आत्यान्तिक आवश्यकता।

3. लघुत्तम दूरी का नवीन मार्ग के विकल्प का प्रस्ताव।

8. उक्त प्रकरण में प्रार्थी ने अपने प्रार्थना पत्र के पैरा संख्या-1 में रास्ते की आत्यान्तिक आवश्यकता का जिक्र किया है तथा अन्य वैकल्पिक रास्ते की अनुपलब्धता का जिक्र किया गया है। साथ ही तहसीलदार थानागाजी की शामिल मिसल रिपोर्ट दिनांक 27.03.2023 से इस तथ्य की पूर्णरूप से पुष्टि होती है। अप्रार्थी द्वारा अपने जवाब एवं एतराज प्रार्थना-पत्र में अंकित वैकल्पिक रास्ता दर्ज रिकॉर्ड नहीं है। अतः शर्त संख्या 1 व 2 की पूर्णरूप से पुष्टि होती है। अतः प्रार्थी का नवीन रास्ते बाबत अनुतोष स्वीकार किया जाना उचित प्रतीत होता है।
9. राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क के तहत आरोपित तीसरी शर्त के अनुसार नवीन रास्ते हेतु लघुत्तम मार्ग का विकल्प पर विचार किया जाना आवश्यक है। तहसीलदार थानागाजी की शामिल मिसल रिपोर्ट दिनांक 27.03.2023 द्वारा लघुत्तम मार्ग बाबत विकल्प को प्रस्तावित किया गया है। अतः राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क के तहत आरोपित तीसरी शर्त के अनुसार नवीन रास्ते हेतु लघुत्तम मार्ग का विकल्प मुताबिक तहसीलदार थानागाजी की शामिल मिसल रिपोर्ट दिनांक 27.03.2023 द्वारा प्रस्तावित मार्ग का विकल्प को स्वीकार किया जाना उचित प्रतीत होता है।
10. उक्त प्रकरण में राजस्थान काश्तकारी अधिनियम-1955 की धारा 251-क के विधिक प्रावधानों के सन्दर्भ में प्रार्थीगण हेतु रास्ते की अत्यान्तिक आवश्यकता एवं वैकल्पिक रिकार्डेड रास्ते हेतु अनुपलब्धता एवं तहसीलदार थानागाजी के पत्र क्रमांक/भू0अ0/2023/991 दिनांक 27.03.2023 के द्वारा प्रेषित की गई मौका जॉच रिपोर्ट मय नजरी नक्शा तथा राजस्व विभाग राजस्थान सरकार के परिपत्र दिनांक 14.06.2013 के आधार पर प्रार्थी का प्रार्थना पत्र राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 251-क काबिल-ए-मंजूर है। अतः तहसीलदार थानागाजी की दिनांक 27.03.2023 की मौका जॉच रिपोर्ट मय नजरी नक्शा के अनुसार प्रस्ताव लघुत्तम मार्ग बतौर 30 फुट चौड़ा गैर मुमकिन रास्ता नियमानुसार भूमि एवं निर्माण, अगर कोई हो तो, की क्षतिपूर्ति राशि भुगतान पश्चात् राजस्व रिकार्ड में दर्ज किया जाना न्यायसंगत प्रतीत होता है। अतः

आदेश है कि

प्रार्थना पत्र राजस्थान काश्तकारी अधिनियम 1955 की धारा 251-क के अन्तर्गत प्रार्थीगण का प्रार्थना पत्र प्रार्थीगण हेतु रास्ते की अत्यान्तिक आवश्यकता एवं वैकल्पिक रिकार्डेड रास्ते हेतु अनुपलब्धता के आधार पर स्वीकार किया जाता है एवं तहसीलदार थानागाजी को आदेश दिये जाते हैं कि दिनांक 27.03.2023 की मौका जॉच रिपोर्ट में अंकित प्रस्ताव में इंगित लाल रंग से प्रदर्शित 10 फुट चौड़ाई के हाल आराजी खसरा संख्या 859/0.49 है0 चाही तृतीय की दक्षिणी डोल के सहारे-सहारे आगे चलकर सिवायचक आराजी खसरा संख्या 857/1.01 है0 बंजड एवं आवश्यकता पडने पर खसरा संख्या 855/1.10 है0 बंजड में से दक्षिण डोल के सहारे-सहारे तरफ पूर्व से पश्चिम लम्बाई में तथा उत्तर से दक्षिण 10 फुट चौड़ा मार्ग वाके ग्राम

बल्लूवास में रास्ते में आयी भूमि की एवज में तथा सिवायचक भूमि पर रास्ते में समाहित भूमि के एवज में परिपत्र दिनांक 14.06.2013 के अनुसार क्षतिपूर्ति राशि आंकलित कर नियमानुसार क्षतिपूर्ति राशि वितरित करते हुये नियमानुसार रास्ते को खाता संख्या-1 सिवायचक में गैर मुमकिन रास्ता दर्ज किया जावे। दिनांक 27.03.2023 की मौका जाँच रिपोर्ट व नजरी नक्शा निर्णय का अनन्य भाग रहेगा।

निर्णय की पालना हेतु एक प्रति तहसीलदार थानागाजी को भिजवायी जावे।

अगर उक्त रास्ते के पेटे आई भूमि एवं निर्माण, अगर कोई हो तो, के एवज में मुआवजा राशि के बाबत उभय पक्षकारों के मध्य सहमति हो तो मुताबिक सहमति मुआवजा राशि का भुगतान प्रार्थीगण अप्रार्थीगणों को करना सुनिश्चित करे। अगर उक्त रास्ते के पेटे आई भूमि एवं निर्माण, अगर कोई हो तो, के एवज में मुआवजा राशि को लेकर उभय पक्षकारों के मध्य सहमति नहीं हो तो, तहसीलदार थानागाजी निर्णय की प्रति प्राप्त होने के 07 दिवस के अन्तर्गत उक्त रास्ते के पेटे आई भूमि एवं निर्माण, अगर कोई हो तो, के एवज में मुआवजा राशि आंकलित कर अप्रार्थीगण को जरिये नोटिस सूचित करते हुये प्रार्थीगण को उक्त मुआवजा राशि जमा कराने हेतु तथा अप्रार्थीगणों को उक्त मुआवजा राशि प्राप्त करने हेतु समय सीमा निर्धारित करते हुये सूचित करे। प्रार्थीगण उक्त नोटिस की अवधि से पूर्व तहसीलदार थानागाजी द्वारा आंकलित राशि नियमानुसार जमा करावे तथा अप्रार्थीगण उक्त नोटिस की अवधि से पूर्व अपनी मुआवजा राशि प्राप्त करे। साथ ही प्रार्थी उक्त नवीन रास्ते में समाहित हुई अप्रार्थीगणों की खातेदारी आराजी के बदले समान अवस्थिति पर समान रकबे व गुणवत्ता की भूमि उपलब्ध करवाने का विकल्प तहसीलदार थानागाजी के समक्ष प्रस्तुत करे तथा अप्रार्थीगण अगर सहमत हो तो अप्रार्थीगणों को भूमि के बदले भूमि दर्ज रिकॉर्ड की जावे। उक्त नोटिस की अवधि समाप्ति के पश्चात तहसीलदार थानागाजी प्रार्थीगण के नियमानुसार मुआवजा राशि नियत तिथि तक जमा कराने तथा अप्रार्थीगण द्वारा नियत तिथि तक मुआवजा राशि/भूमि प्राप्त नहीं करने की स्थिति में मुआवजा राशि को निर्धारित मद में जमा करते हुये उक्त रास्ते के राजस्व रिकॉर्ड में अमल दरामद कर मौके पर उक्त रास्ते को चालू कराना सुनिश्चित करे।

यह आदेश आज दिनांक 06.07.2023 को लिखवाया जाकर सरे-इजलास सुनाया गया एवं अधोहस्ताक्षकर्ता की मुहर व हस्ताक्षर से जारी किया गया।

(केशव कुमार मीना आर.ए.एस.)
उपखण्ड अधिकारी
थानागाजी-अलवर